बुद्धि के सिद्धांत (theories of Intelligence)

बुद्धि के सिद्धांत अनेक मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की प्रकृति तथा संरचना के आधार पर बुद्धि के अनेक सिद्धांत दिए जिन्हें उनके कारकों की संख्या के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. एकाएक या एक तत्वीय सिद्धान्त (Uni-Factor Theory) - इस सिद्धान् के अनुसार बुद्धि एक अविभाज्य इकाई (Undivisible Unit) है जिसके द्वारा समस्त मानसिक क्रियाएं नियन्त्रित होती है अतः यह एक सर्वशक्तिशाली मानसिक शक्ति है। सभी मानसिक क्रियाओं पर शासन करती है। इस सिद्धान्त के समर्थक मनोवैज्ञानिक दिन (Binet), टरमैन (Terman) तथा स्टर्न (Stern) जैसे मनोवैज्ञानिकों को है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त को बाद में अस्वीकार कर दिया है।

2. द्वि-तत्वीय सिद्धान्त सिद्धान्त (Two Factor Theory): इस सिद्धान्त के समर्थक स्पियरमैन के अनुसार बुद्धि के दो तत्व होते हैं-

(i) सामान्य तत्व योग्यता (General Ability or 'G' Factor)

(ii) विशिष्ट तत्व या योग्यता (Specific Ability or 'S' Factor)

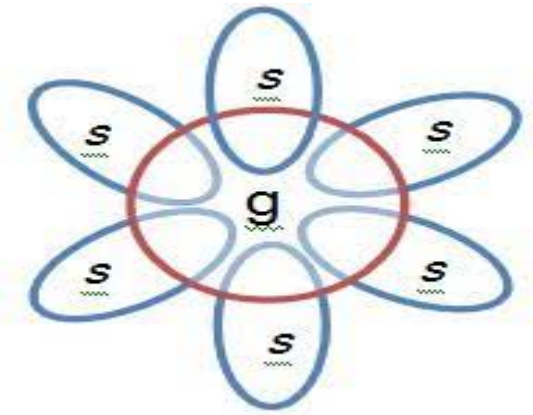

स्पियरमैन ने बुद्धि को दो शक्तियों या योग्यताओं का योग माना है। सामान्य योग्यता व्यक्तित्व को सभी प्रकार के कार्यों में सहायता करती है और विशिष्ट योग्यता विशेष कार्यों में सहायक होती है। जैसे कोई गणित में प्रवीण होता है, कोई कला में, कोई संगीत में और कोई विज्ञान आदि में। इस प्रकार विशेष कार्यों में प्रवीणता विशिष्ट बुद्धि-तत्व (S-Factor) द्वारा प्राप्त होती है। सामान्य कार्य करने में सामान्य बुद्धि तत्व ('G' Factor) सहायक होता है।

'G' तत्व की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं

(i) यह तत्व जन्मजात होता है।

(ii) यह तत्व सदैव समान होता है।

(iii) यह तत्व सभी व्यक्तियों में पाया जाता है।

(iv) सामान्य योग्यता में प्रत्येक व्यक्ति या बालक भिन्न होता है।

(v) जिस व्यक्ति में यह तत्व अधिक पाया जाता है, वह दूसरों की अपेक्षा जीवन में अधिक सफल रहता है।

(vi) यह तत्व जीवन के सभी कार्यों के लिए आवश्यक होता है।

'S' तत्व की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है –

(i) यह तत्व अलग-अलग व्यक्तियों में कम या अधिक मात्रा में पाया

(ii) विशिष्ट तत्व को अर्जित किया जा सकता है।

(iii) (iii) व्यक्ति में जिस विशिष्ट तत्व की अधिकता होती है. वह उसी में निपुण होता है

(iv) भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के विशिष्ट तत्व होते हैं।

इस सिद्धान्त में स्पियरमैन ने बुद्धि के 'G' और 'S' तत्वों के साथ एक और सामूहिक तत्व जोड़ दिया। इसके अनुसार बुद्धि परीक्षा में सामान्य बुद्धि, विशिष्ट बुद्धि और भाषा या स्थानात्मक ज्ञान की आवश्यकता होती है।

3. बहुकारक सिद्धान्त (Multi-Factor Theory) : थार्नडाइक ने बुद्धि बहुकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि असंख्य कारकों से मिलकर बनी है। इन स्वतंत्र कारकों में से प्रत्येक कारक किसी विशिष्ट कि योग्यताओं का आंशिक प्रतिनिधित्व करता है। किसी भी मानसिक कार्य को करने में ऐसे अनेक छोटे-छोटे कारक साथ मिलकर सहायता करते हैं। विभिन्न प्रकार मानसिक कार्यों में इन छोटे-छोटे कारकों के विभिन्न समूहों की आवश्यकता होती 1 यदि कोई दो मानसिक कार्य एक-दूसरे से सम्बन्धित होते हैं तो बहु-कारक सिद्धान्त ● अनुसार इसका कारण दोनों मानसिक कार्यों को करने में कुछ कारकों का उभयनिष्ठ हना है। थार्नडाइक का मानना था कि कुछ मानसिक क्रियाओं में काफी तत्व उभयनिष्ठ हते है, जिसके कारण इस प्रकार की मानसिक क्रियाओं को किसी एक वर्ग में रखकर शिष्ट नाम देना व्यावहारिक दृष्टि से लाभप्रद हो सकता है। जैसे - शब्दार्थ, शब्द-प्रवाह, रसना, स्मृति आदि

मानसिक क्रियाओं को कुछ ऐसे ही वर्ग में रखा जा सकता है।

4. समूहकारक सिद्धान्त (Group Factor Theory) : थर्सटन (Thurstone) के द्वारा प्रतिपादित बुद्धि के समूहकारक सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि न तो मुख्य रूप से सामान्य कारक से निर्धारित होती है तथा न ही असंख्य सूक्ष्म व विशिष्ट तत्वों से मिलकर बनी है। बल्कि कुछ प्राथमिक कारकों से मिलकर बनी होती है। उसके अनुसार एक जैसी मानसिक क्रियाओं में कोई एक प्राथमिक कारक उभयनिष्ठ होता है. जो उन सभी क्रियाओं को मनोवैज्ञानिक व कार्यवाहक दृष्टि से समाकलित करता है। तथा सही प्राथमिक कारक उन क्रियाओं का अन्य मानसिक क्रियाओं से विभेद स्पष्ट करता है। इस प्रकार से कुछ मानसिक क्रियाएँ एक समूह का निर्माण करती हैं, जिनमें कोई एक प्राथमिक कारक या समूह कारक प्रमुख भूमिका अदा करता है। मानसिक क्रियाओं को किसी दूसरे समूह में कोई दूसरा प्राथमिक कारक होता है तथा तीसरे समूह में कोई तीसरा कारक होता है। इस प्रकार से मानसिक क्रियाओं के अनेक समूह होते हैं तथा प्रत्येक समूह का एक अलग प्राथमिक कारक होता है, जो समूह की क्रियाओं को समन्वय व समष्टिता प्रदान करके उन्हें कार्यवाहक इकाई बनाता है। व प्राथमिक कारक एक-दूसरे से पृथक व स्वतन्त्र होते हैं। थर्स्टन व उसके सहयोगियों ने प्राथमिक कारकों का पता लगाया है। 1

(i) स्मृति (Memory, M)

(ii) प्रत्यक्षीकरण की योग्यता (Perceptual Ability, P)

(iii) सांख्यिकी योग्यता (Numerical Ability, N)

(iv) शाब्दिक योग्यता (Verbal Ability, V)

(v) तार्किक योग्यता (Reasoning, R)

(vi) निगमनात्मक योग्यता (Deductive Ability, D)

(vii) आगमनात्मक योग्यता (Inductive Ability, I)

(viii) स्थान सम्बन्धी योग्यता (Spatial Ability, S)

(ix) वाकपटुता योग्यता (Word Fluency, W)

5. पदानुक्रमिक सिद्धान्त (Hierarchical Theory): फिलिप बर्नन (Philip Vernon) ने सन् 1960 में मानवीय योग्यताओं की संरचना प्रस्तुत करते हुकहा कि मानवीय योग्यताएँ एक क्रमिक (Hierarchical) रूप में व्यवस्थित होती हैं।। इस क्रमबद्ध व्यवस्था में क्रमशः सामान्य कारक (General Factor), मुख्य समूह कारक (Major Group Factor), लघु समूह कारक Minor Group Factors) तथा विशिष्ट कारक (Specific Factors) होते है। सामान्य कारक (g) सर्वाधिक व्यापक कारक है तथा सभी प्रकार के मानसिक कार्यों में सहायक होता है। सामान्य कारक (g) को दो मुख्य समूह कारकों शाब्दिक व शैक्षिक योग्यताएँ (V: Ed) तथा

गतिक व यान्त्रिक योग्यताएँ (Km) में विभक्त किया गया है। इन दोनों मुख्य समूह कारकों को पुनःशाब्दिक, आंकिक यान्त्रिक सूचना प्रयोगात्मक, स्थानिक जैसे लघु समूह कारकों मैं बाँटा जा सकता है। लघु समूह कारकों को विशिष्ट मानसिक कार्यों से सम्बन्धित अनेक विशिष्ट कारकों के रूप में विभक्त किया जा सकता है। निःसन्देह ये विशिष्ट कारक स्पियरमैन के एस-कारक (S-Factor) में समतुल्य माने जा सकते हैं। कैटल ने सन् 1963 में द्रवीकृत बुद्धि (Fluid Intelligency) तथा घनीकृत (Crystallized Intelligence) में अन्तर करते हुए कहा कि द्रवीकृत बुद्धि मुख्यतः व्यक्ति के वंशानुक्रम से निर्धारित होती है, जबकि घनीकृत बुद्धि मुख्यतः व्यक्ति के वातावरण से सम्बन्धित होती है। अतः कैटल-घनीकृत बुद्धि का प्रत्यय काफी सीमा तक बर्नन के Vied - k : m के समक्ष ही है। बर्नन का v ed का मुख्य समूहकारक कैटल के घनीकृत बुद्धि के तथा k : m मुख्य कारक द्रवीकृत बुद्धि के समान है।